कहानी की परिभाषा एवं तत्व का विश्लेषण :-

"आज की लोकप्रिय साहित्यिक विधाओं में कहानी को मुख्य स्थान प्राप्त है। "साहित्य की समस्त विधाओं में यही एक ऐसी विधा है जो पाठक का परम अनुरंजन करने के साथ-साथ एक चिरन्तन सत्य का उद्घाटन करने में प्रयत्नवान रहती है। ~~[illegible]~~ लोक-कल्याण भावना और लोकरंजन तत्व का जितना सुन्दर समन्वय इस विधा से होता है उतना साहित्य की किसी अन्य विधा से नहीं।"

कहानी की परिभाषा आज तक सर्वसम्मत नहीं हो सकी है क्योंकि अभी यह विकासशील विधा है, कहानी की प्रगति क्षण-क्षण में निरन्तर नवीनता प्राप्त कर रही है।

भारतीय विद्वानों द्वारा प्रदत्त परिभाषायें निम्नलिखित हैं -

(1) प्रेमचन्द :- "कहानी (गल्प) वह रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को ~~को~~ प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते हैं।"

(2) प्रसाद :- "सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा रस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्देश्य है।"

(3) जैनेन्द्र :- "कहानी तो एक भूख है जो ~~[illegible]~~ निरन्तर समाधान पाने की कोशिश में रहती है। हमारे अपने सवाल होते हैं, शंकायें होती हैं, चिन्ताएँ होती हैं और हम उनका उत्तर, उन

समाधान खोजने का, पाने का सतत प्रयत्न करते रहते हैं। हमारे प्रयोग होते रहते हैं। उदाहरणों और मिसालों की खोज होती रहती है। कहानी उसी खोज के प्रयत्न का एक उदाहरण है।"

(4) अज्ञेय :- "कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती।"

(5) गुलाबराय :- "छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति - केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक उत्थान, पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला वर्णन हो।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर आधुनिक कहानियों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
आकार लाघव, पात्रों की न्यूनता, कार्य - स्थान - काल की एकता, जीवन की घटना अथवा स्थिति विशेष का मार्मिक चित्रण, कहानी पर यथार्थ का आवरण, घटना अथवा परिस्थिति की सरलता, एक भावना एक घटना का प्रभावपूर्ण चित्रण, संकेतात्मक चरित्र - चित्रण, उद्देश्य की स्पष्टता, व्यक्तित्व प्रधान शैली, नाटकीय कथनोपकथन, परोक्ष रूप से मानवीय संदेश, मानव- मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण, ~~औत्सुक्य~~ औत्सुक्य, मानव के शाश्वत संघर्ष की व्यंजना कलात्मक शैली इत्यादि।" 1

कहानी की इन विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित तत्त्व निर्धारित किये गए हैं-

(1) कथावस्तु (2) पात्र तथा चरित्र - चित्रण (3) कथोपकथन या संवाद (4) वातावरण अथवा देशकाल (5) भाषा शैली (6) उद्देश्य।

(1) कथावस्तु :- कथावस्तु कहानी का महत्वपूर्ण तत्व है। इसके बिना कहानी की कल्पना ही नहीं की जाती किन्तु आज कल बिना इसके भी कहानियों का

सृजन हो रहा है।
कथा वस्तु की सफलता के लिए निम्नलिखित विशेषताओं का होना अनिवार्य है-
(1) संवेदना (2) संघर्ष (3) कौतूहल (4) औत्सुक्य और करुणा (5) कथानक का किसी सत्य के उद्घाटन में समर्थ होना, (6) कथानक का खण्डों में विभाजन और संक्षेप। इन विशेषताओं से सम्पन्न कथानक सुन्दर प्रभावशाली कहानी के सृजन में योगदान दे सकता है। कथावस्तु का विभाजन आरंभ, मध्य और अन्त के रूप में होता है।

(2) पात्र और चरित्र-चित्रण ! - आधुनिक कहानियों में चरित्र-चित्रण को विशेष महत्त्व प्राप्त है। चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से होता है। कहानी के पात्र सजीव और व्यक्तित्व पूर्ण होने चाहिए कहानी के पात्र कल्पना-लोक में जन्म लेकर भी अपने व्यक्तित्व के अनुकूल कार्य-कलाप करते हैं।

चरित्र-चित्रण में सबल और निर्बल दोनों ही पक्षों के चरित्र होने चाहिए। तभी उसमें स्वाभाविकता कहानी में चरित्र ० दो सुरक्षित रह सकती है। प्राय: कहानी में चरित्र दो प्रकार के होते हैं- वर्गगत और व्यक्तिगत। इनमें भी कोई देवपात्र होता है तो कोई असुर और कोई मानव।

(3) कथोपकथन या संवाद ! - यह ० कहानी का प्राण तत्व है। संवाद कहानी में चरित्र का चित्रण, वर्णन में रोचकता तथा प्रवाह और कथावस्तु को विकास की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। संवाद कहानी को अभिव्यक्ति संवेद्य बनाते हैं। वे एक विशेष प्रकार के वातावरण का निर्माण करने में समर्थ होते हैं। संवाद कहानी में स्वाभाविकता भी लाते हैं।

(4) वातावरण अथवा देशकाल ! - " कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने वाले तत्वों में वातावरण का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। वातावरण से विरहित कहानी ठीक उसी तरह प्रभावहीन लगेगी, जिस प्रकार दुष्यंत

और शकुन्तला का अभिनय करने वाले पात्र का मन देशकाल परिस्थिति कहानी में जीवन्त रूप वातावरण की प्रभावोत्पादक नहीं होता। वातावरण से तात्पर्य है पाठक के मस्तिष्क पर पड़ने वाला वह प्रभाव है जो देशकाल और व्यक्ति की पारस्परिक अनुरूपता से उत्पन्न होता है।" इस तत्व के अन्तर्गत कहानी में देशकाल का चित्रण वेशभूषा, खान पान, रीति रिवाज, रहन सहन, आचार विचार, प्रकृति वर्णन, नगर वर्णन, ऋतु वर्णन, काल आदि का समावेश होता है।

(5) <u>भाषा शैली</u>:- कहानी की भाषा वातावरण, पात्र और परिस्थिति के अनुकूल होना चाहिए। स्वच्छ, सरल, व्यावहारिक, स्पष्ट, शुद्ध, गतिशील, सरस तथा गंभीर और भावपूर्ण स्थलों पर परिवर्तनशील भाषा कहानी के सौन्दर्य की वृद्धि करती है। शैली आकर्षक, हास्य व्यंग्य और विनोद से युक्त होनी चाहिए। लोकोक्ति एवं मुहावरों से युक्त भाषा शैली सुन्दर मानी जाती है।

(6) <u>उद्देश्य</u>:- साहित्य की प्रत्येक विधा किसी न किसी उद्देश्य या लक्ष्य को लेकर लिखी जाती है। अतः कहानी भी सोद्देश्य ही लिखी जाती है। कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना ही नहीं है, उसका उद्देश्य जीवन के तथ्यों का विश्लेषण तथा मानव मन का विश्लेषण अध्ययन भी है। कहानी का उद्देश्य आदर्शवादी/यथार्थवादी हो सकता है। कभी-कभी यह स्पष्ट भी उद्देश्य स्पष्ट भी हो जाता है। 'उसने कहा था', इसमें प्रेम और आदर्श की प्रतिष्ठा की गई है। कभी-कभी उद्देश्य गूढ़ रहता है तो कभी अंतिम वाक्य में निहित होता है। जैसे अज्ञेय की कहानी 'शत्रु' का अंतिम वाक्य "जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरंतर आसानी की ओर आकृष्ट होते रहते हैं।" यह वाक्य कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करता है।

कुछ कहानीकार कहानी में उद्देश्य तत्व को विशेष महत्व प्रदान करते हैं और कुछ इसको इतना महत्व नहीं देते। वास्तव में कहानी समस्याओं का हल नहीं करती अपितु वह संकेत मात्र करती है।